


---

# Rishi Agastyaproktam Shivarchanopadesham 2

——  
ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशम् २

——  
Document Information



---

Text title : Rishi Agastyaproktam Shivarchanopadesham 2

File name : shivArchanopadesham2.itx

Category : shiva, shivarahasya, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 27

madhyArjunamahimAnuvarNanam | 740-748||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशम् २



(शिवरुद्रस्थान्तर्गते उग्राप्ये)

अगस्त्यः

अतो यं काममुद्दिश्य यः शिवम्पूजयिष्यति ।

स तं काममवाप्नोति ततोऽधिकमपि ध्रुवम् ॥ ७४० ॥

येऽर्थयन्ति मडादेवं सावधानेन सन्ततम् ।

ते समृद्धा भवन्त्येव पुत्रदारधनादिभिः ॥ ७४१ ॥

अप्राप्यं नास्ति शैवेन्द्र श्रीमडादेवपूजया ।

श्रीमडादेवमाराध्य को वा न सुभमेधते ॥ ७४२ ॥

नित्यमव्यभियारिण्या भक्त्या पूज्योमलेश्वरः ।

दुर्लभा तादृशी भक्तिर्यतः सर्वार्थदायिनी ॥ ७४३ ॥

किं कामधेनुभिर्विप्र किं कल्पतरुकोटिभिः ।

यदि भक्तिर्मडादेवे सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ ७४४ ॥

यदि भक्तिर्मडादेवे भक्तितरव्यभियारिणी ।

तदेन्द्रोपेन्द्रयन्द्राद्या गणनीया न सर्वथा ॥ ७४५ ॥

सम्प्राप्य शाम्भवीं भक्तिं गणयिष्यति कः सुरान् ।

शिवेतरामराः सर्वे यतः शङ्करकिङ्कराः ॥ ७४६ ॥

देवोत्तमं मडादेवमाश्रित्याप्यन्यदेवतम् ।

कः समाराधयेत्प्राज्ञो धनीनिर्धनिनो धनम् ॥ ७४७ ॥

येऽभिवान्छन्ति सततमैडिकामुष्मिकं कृलम् ।

तेषां सदा शिवादन्यः पूज्यो न भवति ध्रुवम् ॥ ७४८ ॥

॥ एति शिवरुद्रस्थान्तर्गते ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशं २ सम्पूर्णां ॥

- ॥ श्रीशिवरुद्रस्यम् । उग्राप्यः सप्तमांशः । अध्यायः २७ मध्याह्नमडिमानुवार्णनम् । ७४०-७४८ ॥


- . shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 27 madhyArjunamahimAnuvarNam  
. 740-748..


Notes:

Rṣi Agastya ऋषि अगस्त्य; delivers Upadeśa उपदेश as an iteration about worshipping Śiva शिव.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Rishi Agastyaproktam Shivarchanopadesham 2*  
pdf was typeset on June 16, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

